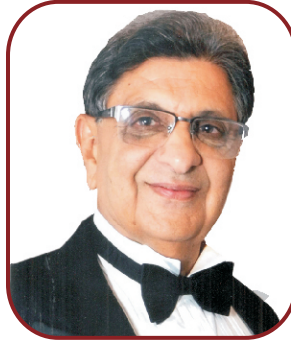


Padma Bhushan



DR. CYRUS SOLI POONAWALLA

Dr. Cyrus Soli Poonawalla, a visionary, India's vaccine Pioneer, is the Chairman of Poonawalla Group which includes the privately-owned Serum Institute of India, India's top biotech company and the world's largest vaccine manufacturer by number of doses produced and sold globally.

2. Born on 11th May, 1941, Dr. Poonawalla graduated from Brihan Maharashtra College of Commerce (BMCC) in 1963. In 1966, he embarked on his journey with a humble beginning to establish Serum Institute of India, with a vision to make affordable vaccines which were unavailable in India at that time. He was conferred a Ph.D. from the University of Pune in 1988 for his thesis entitled "Improved Technology in the Manufacture of Specific Anti-Toxins and Its Socio-Economic Impact on the Society." He was also conferred "Doctor of Literature" at the hands of His Excellency Governor of Maharashtra.

3. Today, Serum Institute is the world's largest producer of vaccines by number of doses, producing more than 1.5 billion doses a year of life-saving vaccines, being used in over 170 countries to combat infection from Tetanus, Measles, Mumps, Rubella, Whooping Cough, Tetanus, Tuberculosis, Influenza, Meningitis, Polio, Rotavirus, Rabies, Pneumonia among others, thereby protecting more than 2/3rd of the infant population globally. With the latest landmark launch of a vaccine against Covid-19, the figure will exceed 2 billion doses shortly. Today, he is accredited with saving more than 30 million human lives across the globe.

4. For these efforts, Dr. Poonawalla has received numerous accolades and prestigious awards, including: Honorary Degree of "Doctor of Science (Honoris Causa) by the University of Oxford; Honorary Degree of "Doctor of Humane Letters" by the University of Massachusetts; First-ever "Vaccine Hero" Award for commitment to Global Public Health presented by Global Alliance for Vaccines and Immunization; "Lifetime Achievement Award"; "Sabin Humanitarian Award 2005" and the "Sabin Corporate Philanthropy Award". He is the first Indian to receive the "Excellence in Inter-American Public Health Award" presented by The Pan American Health Organization (PAHO) and Pan American Health and Education Foundation (PAHEF) for his extraordinary contribution to eliminate Rubella and Congenital Rubella Syndrome in South America, He was also honoured with "Padma Shri" in 2005; "Best Vaccine Executive of the Year" presented during the World Vaccine Congress Asia event in 2011 in Singapore; "Ernst & Young Entrepreneur of the Year Award 2012" under the category of Business Transformation; "Rajat Kamal National Award" for the best Education/Motivational/Instructional film entitled "The Triumph" in the field of leprosy; "Gold Award" from the British Medical Association for the film "Snakebite" in 1987 at the hands of Sir Richard Attenborough. He is considered as an icon in the thoroughbred horseracing and breeding world. The International Federation of Horseracing Authorities (IFHA - the world Apex Body) bestowed on him the "Lifetime Achievement Award" on 5th October 2009 in Paris for his outstanding contribution in the field of horseracing and breeding.

पद्म भूषण



डॉ. सायरस सोली पुनावाला

एक स्वप्न दृष्टा और भारत के वैक्सीन पायनियर डॉ. साइरस सोली पुनावाला, पूनावाला ग्रुप के चेयरमैन हैं, जिसमें निजी स्वामित्व वाली सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया शामिल है, जो भारत की शीर्ष बायोटेक कंपनी और उत्पादन की जाने वाली तथा दुनिया भर में बेची जाने वाली खुराकों की संख्या के हिसाब से दुनिया की सबसे बड़ी वैक्सीन निर्माता कंपनी है।

2. 11 मई, 1941 को जन्मे, डॉ. पुनावाला ने 1963 में बृहन् महाराष्ट्र कॉलेज ऑफ कॉमर्स (बीएमसीसी) से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। 1966 में, उन्होंने सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया की स्थापना के साथ एक साधारण शुरुआत करते हुए अपनी यात्रा आरंभ की। उनका ध्येय ऐसे सस्ते वैक्सीन बनाना था, जो उस समय भारत में अनुपलब्ध थे। पुणे विश्वविद्यालय ने 1988 में उन्हें अपने थीसिस 'विशिष्ट एंटी-टॉक्सिन के निर्माण में बेहतर प्रौद्योगिकी और समाज पर उसका सामाजिक-आर्थिक प्रभाव' के लिए पी. एचडी. की डिग्री प्रदान की। उन्हें महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल के हाथों 'डॉक्टर ऑफ लिटरेचर' की उपाधि से भी सम्मानित किया गया।

3. आज, सीरम इंस्टीट्यूट खुराकों की संख्या के हिसाब से दुनिया में टीकों का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो एक साल में जीवन रक्षक टीकों की 1.5 बिलियन से अधिक खुराक का उत्पादन कर रहा है, जिनका उपयोग 170 से अधिक देशों में टेटनस, खसरा, मंप्स, रूबेला, काली खांसी, टेटनस, क्षय रोग, इन्फ्लुएंजा, मेनिनजाइटिस, पोलियो, रोटावायरस, रेबीज, निमोनिया आदि के संक्रमण से निपटने के लिए किया जा रहा है। इससे दुनिया भर में दो तिहाई से अधिक शिशुओं को प्रतिरक्षा मिलती है। हाल में कोविड-19 के वैक्सीन के ऐतिहासिक लॉन्च के साथ, यह आंकड़ा जल्द ही 2 बिलियन खुराक से अधिक हो जाएगा। आज, उन्हें दुनिया भर में 3 करोड़ से ज्यादा मानव जीवन बचाने का श्रेय जाता है।

4. इन प्रयासों के लिए, डॉ. पुनावाला को कई प्रशस्तियां और प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं, जिनमें ये शामिल हैं: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा "डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद डिग्री; मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय द्वारा "डॉक्टर ऑफ ह्यूमन लेटर्स" की मानद डिग्री; दुनिया भर में लोक स्वास्थ्य के प्रति प्रतिबद्धता के लिए ग्लोबल अलायंस फॉर वैक्सीन्स एंड इम्युनाइजेशन द्वारा पहली बार "वैक्सीन हीरो" अवार्ड; "लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड"; "साबिन ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड 2005" और "साबिन कारपोरेट फिलेंथ्रॉपी अवार्ड"। दक्षिण अमेरिका में रूबेला और जन्मजात रूबेला सिंड्रोम को खत्म करने में उनके असाधारण योगदान के लिए पैन अमेरिकन हेल्थ ऑर्गनाइजेशन (पीएएचओ) और पैन अमेरिकन हेल्थ एंड एजुकेशन फाउंडेशन (पीएएचईएफ) द्वारा दिया गया "एक्सीलेंस इन इंटर-अमेरिकन पब्लिक हेल्थ अवार्ड" पाने वाले वह पहले भारतीय हैं। उन्हें 2005 में "पद्म श्री"; सिंगापुर में 2011 में वर्ल्ड वैक्सीन कांग्रेस एशिया कार्यक्रम के दौरान दिया गया "बेस्ट वैक्सीन एक्जीक्यूटिव ऑफ द ईयर"; व्यावसायिक कार्यालय की श्रेणी में "अर्नस्ट एंड यंग एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर अवार्ड 2012"; कुष्ठ रोग के क्षेत्र में "द ट्रायम्फ" नामक सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक / प्रेरक / निर्देशात्मक फिल्म के लिए "रजत कमल राष्ट्रीय पुरस्कार"; 1987 में फिल्म "स्नेकबाइट" के लिए ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन से सर रिचर्ड एटनबरो के हाथों "गोल्ड अवार्ड" से भी सम्मानित किया गया। उन्हें शुद्ध नस्ल वाले घोड़ों की घुड़दौड़ और ब्रीडिंग की दुनिया में एक आइकन के रूप में देखा जाता है। इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ हॉर्सरेसिंग ऑथोरिटीज (आईएफएचए - द वर्ल्ड एपेक्स बॉडी) ने घुड़दौड़ और ब्रीडिंग के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें 5 अक्टूबर, 2009 को पेरिस में "लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड" प्रदान किया।